सहज और गहन श्वेत-श्याम तस्वीरें

वर्षा दास

हमारे एक मूर्धन्य छायाकार पाब्लो बार्थलोमियो की खींची हुई तस्वीरों की प्रदर्शनी इन दिनों दिल्ली के झंडेवालान इलाके की दीर्घा फोटोइंक में चल रही है। इस इलाके में सब कुछ है, विदेशी मोटरकारों का शोरूम, रास्ते पर हर प्रकार के वाहनों की भीड़, कूड़ा-कचरा इत्यादि।

इन सबके बीच एक कलादीर्घा का होना असंभव-सा लगता है। बाहर की ओर लगे हुए शीशे अपारदर्शक होने के कारण, पता भी नहीं चलता है कि यहां कोई प्रदर्शनी हो सकती है। दीर्घा के नाम के अनुसार यहां केवल फोटो की प्रदर्शनी होती है।

पाब्लो ने ही कुछ वर्ष पहले अपने पिता रिचर्ड बार्थलोमियो द्वारा खींची गई तीस हजार तस्वीरों में से लगभग 150-200 तस्वीरें छांटकर फोटोइंक दीर्घा में एक अपूर्व प्रदर्शनी का आयोजन किया था। और 2008 में राष्ट्रीय संग्रहालय की दीर्घा में खुद पाब्लो की खींची गई श्वेत-श्याम तस्वीरें प्रदर्शित की गई थीं। इस प्रदर्शनी का शीर्षक था 'बाहर-भीतरः तीन शहरों की कहानी'।

वास्तव में वे तस्वीरें शहरों की नहीं थीं, किंतु इन तीनों शहरों में पाब्लो ने सत्तर और अस्सी के दशक में जिन लोगों के साथ समय बिताया, अपने आप को जिस तरह का पाया, उसकी तस्वीरें थीं।

वर्तमान प्रदर्शनी का शीर्षक है- 'बीती जिंदगी का इतिवृत्त- मुंबई (1979 और 80 के दशक)'। मुंबई में उन वर्षों के दौरान पाब्लो ने अपने इर्द-गिर्द, अपनी बाहरी दुनिया में जो अनोखे रंग-ढंग देखे, विविधता में एकरसता देखी, एक ही प्रकार की घटना में वैविध्य देखा, कुछ चीजों का विकासक्रम देखा तो कुछ का नकारात्मक परिवर्तन। इन सभी को संवेदनशील छायाकार ने अपने कैमरे में कैद किया और इस प्रदर्शनी में 102 तस्वीरों में प्रस्तुत किया।

कई तस्वीरों में सोते हुए व्यक्ति को दिखाया गया है। चौपाटी के समुद्र किनारे पर सोया हुआ आदमी, मां और बच्चा नींद में, बार के बाहर सोया हुआ आदमी, फुटपाथ पर सोए हुए लोग इत्यादि। पाब्लो बताते हैं कि 'आजकल सार्वजनिक स्थानों पर सोए लोग कम दिखाई देते हैं। लेकिन विभिन्न परिवेशों में सोऐ हुए लोगों ने मुझे हमेशा आकृष्ट किया है। जब मैं सक्रिय पत्रकार था, तब मृत लोगों की, सदा के लिए सो चुके लोगों की बहुत तस्वीरें खींचता था। बम विस्फोट में मरे हुए लोग, दैवी आपदा से मरे हुए लोग, यों ही सोए हुए लोग, वगैरह।'

पाब्लो की खींची एक तस्वीर

पाब्लो का दूसरा प्रिय विषय है-माल ढोने का वाहन। चार तस्वीरों का एक समूह बनाकर प्रदर्शित किया गया है। एक में मजदूर जिसे खींचता है, वह ठेला है। दूसरे में बैलगाड़ी में माल ढोया जा रहा है। तीसरे में बांबे सेंट्रल के पास घोड़ागाड़ी है और फिर लेबरनम रोड, जहां गांधीजी रहे थे, वह मणिभवन के पास मोटरगाड़ी है।

कला

पाब्लो जब दिल्ली से मुंबई गए थे तो वहां फिल्म स्टूडियो में स्टिल फोटोग्राफी का काम शुरू किया था। उसी से रोजी-रोटी मिलती थी। उस समय की कुछ तस्वीरें भी इस प्रदर्शनी में शामिल हैं। एक में कृत्रिम बारिश की जा रही है, दूसरे में 'एक्स्ट्रा' कलाकार फिर से शूटिंग शुरू होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तीसरे में अमिताभ बच्चन और कुछ बूढ़े 'ऐक्स्ट्रा' शूटिंग कर रहे हैं। एक और तस्वीर है बड़ी लाइटों और रिफ्लेक्टरों की। फिल्म स्टूडियो के बाहर खड़ी लड़कियां हैं, जो किसी नृत्य में हिस्सा लेंगी।

तरह-तरह के पेशेवरों की तस्वीरें भी हैं जैसे कि रास्ते से, कूड़ेदानों से कागज उठाते लोगों की, वेश्याओं की, माल ढोते मजदूरों की, घड़ीसाज की, भिखारियों की, डिब्बेवालों की, गलियों में करतब दिखाने वालों की, रास्ते पर नाचने वालों की इत्यादि।

पाब्लो की मुंबई की बाहरी दुनिया केवल विषयों के वैविध्य की नहीं है। प्रत्येक तस्वीर का अपना मिजाज है। श्वेत-श्याम तस्वीरों में प्रकाश-छाया का खेल, काले रंग का, यानी अंधकार का परिप्रेक्ष्य, इकरंगा होने पर भी उभरकर आती वर्णछटा छायाकार की कलात्मक दृष्टि, निर्वाह की कुशलता, अपने विषय के प्रति सहृदयता, आडंबर रहित सहजता और गहनता की परिचायक है। यह सब देखकर दर्शक प्रभावित हो जाए तो आश्चर्य की बात नहीं है।

यह प्रदर्शनी 25 फरवरी तक चलेगी।